श्रीमद्भगवद्गीता

16-7-2020

श्लोकसं०-18

"अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥"

हिन्दीअनुवाद -

"हे भरतवंशी अर्जुन! अविनाशी, अप्रमेय तथा नित्य आत्मा के ये शरीर नाशवान् कहे गये हैं, अतः तुम (युद्ध करो॥"

(शाङ्करभाष्य से)

भावार्थ – (क) आत्मा अविनाशी है यानि इसका कभी अंत (नाश) नहीं होता।
(ख) आत्मा अप्रमेय है अर्थात् इस आत्मा का प्रभाव अपरिमित है यानि असीमित है।

(ग) नित्यपद द्वारा भगवान्श्रीकृष्ण ने आत्मा के अत्यन्ताभावाभाव को व्यक्त किया है। अनाशी पद द्वारा आत्मा के विकाररहितत्व को अभिव्यक्त (सूचित) कियागया है। आत्मा स्वतः सिद्ध है। किसी व्यक्ति को अपनी आत्मा का ज्ञान न हो, ऐसा सम्भव नहीं। प्रत्यक्षादिप्रमाण द्वारा घटादि विषयों की सिद्धि अनात्म होने के कारण होती है। प्रमेयज्ञान के पूर्व आत्मा का ज्ञान होना आवश्यक है।

बृहदारण्यकश्रुति प्रतिपादित करती है-
"यत्साक्षादपरोक्षाद् ब्रह्म, स आत्मा सर्वान्तरः।"
सकल देहादिकों आदि की अपेक्षा जो आन्तरिक रूप से उपस्थित है, जिसका साक्षात् तथा अपरोक्ष होता है, वही ब्रह्म है। वह ब्रह्म ही आत्मा है। आत्मा तथा ब्रह्म में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

देह के विनष्ट होनेवाले स्वभाव तथा आत्मा के नित्य (शाश्वत/अमर) होने से इन दोनों के संदर्भ में दुःख करने का कोई औचित्य नहीं है। अतएव अर्जुन तुम मोक्ष के लक्ष्य को दृष्टि में रखते हुए युद्धरूपी कार्य को प्रारम्भ करो।